माधव की माया

अधरों पर मादक वंशी स्वर, नीचे घने वृक्ष की छाया
मोहन की शोभा को द्विगुणित करते, मयूर पक्ष नीलमणि काया ।
रास रचाये सभी गोपियों के संग, माधव की यह माया,
लगता देखो नाच रहा है, रचना संग खुद आज रचैया ।

हिम प्रतिमा

कल तमाम रात बाहर बर्फ गिरती रही
सुबह मैदान में देखी मैंने;
एक माँ और बच्चे की हिम प्रतिमा ।
सारा दिन दर्शकों की भीड़
उस प्रकृति निर्मित प्रतिमा को देखने आती रही,
तभी सुना मैंने कि वह माँ और बच्चा
जो बर्फीली रात सिर छुपाने की जगह माँग रहे थे,
दिन भर से उन्हें किसी ने देखा नहीं है

षोडशी नायिका

चारों ओर समाधिस्थ पर्वत
और उनके मध्य से गुजरती नदी,
मानो समाधि में लीन
सिद्ध योगियों के मध्य से,
पैरों में पायल बाँधे
दबे पाँव गुज़रती
षोडशी नायिका।

बातें

अतीत की बातें हैं दिल के सफेद कागज पर
मोम से लिखे अक्षर ।
जरा सी स्याही ड़ालते ही
चमकने लगते हैं अक्सर ।

सीमा

नदी के लिए क्या जरुरी है ?
कि वह दो तटों के बीच ही बहे ।
कहते हैं कि यदि;
नदी तट तोड़ कर बहने लगे ;
तो सर्वनाश ही होगा ;
लेकिन पर्वतों से उतरती नदी क्यों नहीं विनाशकारी होती?
वस्तुतः सत्य यह है ;
कि नदी अपने भीतर सभी सीमाएँ जानती है ।
पर जब उसके स्वरुप को ही
सीमाओं में बाँधा जाता है ;
तब बन्धन असह्य हो जाने पर
वह उन तटों को तोड़ने पर बाध्य हो जाती है।

डॉ. सुषमा मेहता